

- 53 स्यात्पुखा पिठरं कुण्डं चरुः कुम्भी १५  
 54 कुटः पुनः ॥ १०१९ ॥ १६  
 55 कुटः कुम्भः करोश्च कलशः कलसो निपः ॥ १०१९ ॥ १७  
 56 हसन्यङ्गाराच्यकटीधानीपात्र्यो हसतिका ॥ १८  
 57 भ्राष्ट्रो ऽम्बरीष ॥ १९  
 58 मृचीषमृजीषं पिष्टपाकभृत् ॥ १०२० ॥ २०  
 59 कविर्दर्विः खजाका- ॥ २१  
 60 य स्यात्तर्द्दीहस्तकः ॥ २२  
 61 वार्धन्यां तु गलत्यालूः कर्करी करको ॥ २३  
 62 ॥ १०२१ ॥ २४  
 63 नालिकेरजः करङ्क- ॥ २५  
 64 स्तुल्यौ कटालकपर्परी ॥ २६  
 65 मणिको ऽलिङ्गरो ॥ २७  
 66 गरिकलश्यां तु मन्थिनी ॥ १०२२ ॥ २८  
 67 वैशाखः खजको मन्था मन्थानो मन्थदण्डकः ॥ २९  
 68 मन्थः क्षुब्धो ॥ ३०  
 69 ॥ १०२३ ॥ ३१  
 70 शालात्रिरो वर्धमानः शरावः ॥ ३२

53. Topf (6 W.). — 54. 55. Wasserkrug (7 W.). — 56. Kohlen-  
 becken (5 W.). — 57. Bratpfanne (2 W.). — 58. Topf, worin Mehl-  
 speisen zubereitet werden (2 W.). — 59. Löffel (3 W.). — 60. Höl-  
 zerner Löffel (2 W.). — 61. Wasserkrug (5 W.). — 62. 63. Wasser-  
 krug aus Kokusnuss. — 64. Flacher Kessel (2 W.). — 65. Beson-  
 dere Art Wasserkrug (2 W.). — 66. Butterfass (3 W.). — 67. 68.  
 Butterstößel (7 W.). — 69. Holz, an welches der Butterstößel an-  
 gebunden ist (3 W.). — 70. Irdener Deckel (3 W.).